


---

# Shri Ramalinga Ashtakam

——  
**श्रीरामलिङ्गाष्टकम्**

——  
**Document Information**



---

Text title : Shri Ramalinga Ashtakam 02 57

File name : rAmalingAShTakam.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc\_shiva

Proofread by : Aruna Narayanan

Description/comments : From stotrArNavaH 02-57

Latest update : July 25, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीरामलिङ्गाष्टकम्



वेदवृन्दवन्दितं वरेण्यरूपसुन्दरं  
धेनुदुग्धदोहफेनसन्निभं सदाशिवम् ।  
ध्यानध्येयमप्रमेयमग्रणे(गण)यमीश्वरं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

पञ्चवक्त्रमीदृशं भुजङ्गमेशवन्दितं  
भानुतारकेश्वरानलत्रिनेत्रधारिणम् ।  
नागराजभूषणं विभूतिदेहधूसरं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ २ ॥

पार्वतीपयोधरप्रभाविहारलालसं  
क्रीडनाय शैलजार्धदेहभागभोगिनम् ।  
उर्वशीमुखाभिरेव ताण्डवानुरञ्जितं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ ३ ॥

घण्टिकात्रिशूलपाशयन्त्रराजधारिणं  
श्रीवसन्तभैरवादिसर्वरागरागिणम् ।  
बिल्वरुज्य(रुच्य)पद्ममल्लिकादिपुष्पपूजितं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ ४ ॥

नेत्रजातवेदसा प्रसूनपञ्चबाणहं  
दक्षयज्ञवेदगर्भ(?)मन्त्रतानुरञ्जितम् ।  
श्रीहरं पुरापहं सुरावलीसुखप्रदं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ ५ ॥

धूर्जटिं त्रिलोचनं मृडाह्वयं सदाशिवं  
सुन्दरं वृषाधिरूढमम्बयानुरञ्जितम् ।  
शङ्करं कपर्दिनं महेश्वरं हरं शिवं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ ६ ॥

ज्योतीरूपमिन्दुमौलिमङ्गलप्रदं हरं  
विश्वसृष्टिरक्षमीषणं महेश्वरं (रक्षणप्रणाशहेतुमीश्वरम्) ।  
लिङ्गरूपमद्वयं(च)जाह्नवीतटी(जटा)धरं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ ७ ॥


तथैव विश्वनाथमेव काशिकापुरे स्थितं  
श्रीगिरौ च मल्लिकार्जुनेश्वरं सुरेश्वरम् ।  
तथैव नर्मदातटे त्रिशूलपाणिनं शिवं  
(श्री) रामलिङ्गमाद्यमीशमीश्वरं स्मराम्यहम् ॥ ८ ॥

रामलिङ्गाष्टकं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ९ ॥


॥ इति श्रीरामलिङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Aruna Narayanan

---

——  
*Shri Ramalinga Ashtakam*

pdf was typeset on July 25, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

